२५। करुणा और सेवा के प्रतिनिधि- (८)

# ठक्कर बापा



लेखक :—
श्री बैजनाथ गुप्त 'व्रजेन्द्र'

युग-निर्माण-योजना-मथुरा

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

BRAHMVARCHAS SHODH SANSTHAN
SHANTIKUNJ, HARIDWAR, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

# करुणा और सेवा के प्रतिनिधि ठक्करबापा

सन् १८९१ ई० में इन्जीनियरिंग की परीक्षा पास करते ही ठक्कर बापा को बी. जी. जे. पी. रेलवे में असिस्टेन्ट इन्जीनियर के पद पर नियुक्त कर लिया गया। अपने विद्यार्थी काल से ही वे अपनी ईमानदारी तथा सेवा भावना के लिये विज्ञापित थे। जिस समय भावनगर में उन्होंने मैट्रिक की परीक्षा प्रथम श्रेणी में पास की थी तभी से लोग उन्हें जानने लगे थे।

मैट्रिक पास करने के बाद ठक्कर बापा के सामने एक प्रश्न आया। वह यह कि इस शिक्षा को किस दिशा में आगे बढ़ाया जाये जिससे कि वे समाज तथा राष्ट्र के लिये अधिकाधिक उपयोगी बन सकें। वे इस प्रश्न पर निरन्तर विचार तथा मनन करते रहे। कोई भी सामान्य युवक पढ़ाई के विषय में इस प्रकार नहीं सोचता और न बढ़ते हुए पैरों को रोककर भविष्य का स्पष्ट चित्र निर्धारित करता और न उसके लिये मार्ग का चुनाव। प्रायः वे जिस ओर भी अवकाश पाते उसी ओर बिना सोचे समझे चल पड़ते हैं। जीवन का न कोई लक्ष्य होता है और न ध्येय। निदान वे बहते पानी की तरह जीवन की टेढ़ी-मेढ़ी लकीरें बनाते हुए उसको सफलता का मुख पाते हैं, न कोई उल्लेखनीय उन्नति कर पाते हैं न समाज की कोई उपयोगी सेवा।

किन्तु ठक्कर बापा ऐसे अस्त-व्यस्त विचार वाले नौजवान नहीं थे। वे मानव-जीवन का मूल्य जानते थे और उसका ठीक-ठीक सदुपयोग कर समाज की कुछ सेवा करना चाहते थे। इसके लिये एक व्यवस्थित विचार शैली तथा एक निश्चित मार्ग की आवश्यकता होती है—ठक्कर बापा जीवन के इस नियम से भी परिचित थे। निदान उन्होंने मैट्रिक के बाद अपना पथ निर्धारित करने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org



के लिये गम्भीरतापूर्वक विचार किया। पढ़-लिख कर कोई छोटी-मोटी नौकरी कर ली जाये—यह विचार तो उनके पास आ ही नहीं सका था। क्योंकि पेट पालने मात्र के लिये शिक्षा का उपयोग करते रहना वे विद्या का अपमान ही समझते थे। उनका कहना था कि जो शिक्षा और जो शिक्षित समाज के किसी काम नहीं आते उनको मैं नहीं के समान ही मानता हूँ। जो शिक्षित होकर ज्ञान पाकर समाज के काम न आये उसकी उन्नति तथा विकास में सहयोग न कर सके उसमें और एक अल्पबुद्धि अशिक्षित व्यक्ति में अन्तर ही क्या रह जाता है। जिस प्रकार ना समझ व्यक्ति समाज को अदृष्टिगोचर कर केवल अपने लिये ही सब कुछ करते और जीते हुए एक अमहत्वपूर्ण जीवन बिताते रहते हैं। समाज की क्या दशा है ? उसके प्रति मेरा क्या कर्तव्य और मैं उसके प्रति अपने कर्तव्य को किसी दिशा में और किसी सीमा तक पालन कर सकता हूँ—इस प्रकार के सामाजिक प्रश्न उनके मस्तिष्क में प्रतिध्वनित नहीं हो पाते। वे समाज में रहते हुए भी असामाजिक जीकर चले जाते हैं—यदि इसी प्रकार इसी आदर्श पर कोई शिक्षित व्यक्ति भी स्वार्थ की संकुचित परिधि में ही रहकर सोचता और जीता रहे तो उसे भी उन्हें असामाजिक व्यक्तियों की गणना में रखा जायेगा। शिक्षा की सच्ची सार्थकता है जीवन को देश, राष्ट्र अथवा समाज के लिये उपयोगी बनाना।

ठक्कर बापा निरन्तर विचार और मनन करते रहे। उन्हें विचार आया कि न हो सिविल सर्विस में चले जायें और उस स्थान से यथासम्भव जनता की सेवा करूँ। किन्तु उन्हें यह विचार ग्राह्य नहीं हुआ। वे आई० सी० ऐस० लोगों की दशा देख ही रहे थे। एक ऊँचे पद पर होने पर भी उन्हें अधिकारों से इतने वञ्चित रहना पड़ता है कि जनता की सेवा का कोई मौलिक विचार उनके मस्तिष्क में आ ही नहीं सकता। वे शासन के एक यंत्र मात्र होते हैं और उनका कर्तव्य एक मात्र शासन धुरी को जनता पर इस प्रकार लादे रहने में मदद करना कि वह उस भार को यदि अनुभव भी करे तो उसका विरोध न कर सके। आई. सी. ऐस. की दिशा में जाने वाले व्यक्ति नौकर शाही के एक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org



बड़े स्तम्भ होने के सिवाय और कुछ नहीं होते। वे सरकार को जनहित का कोई न परामर्श दे सकते और न स्वयं ही कुछ कर सकते हैं। अस्तु उस ओर जाना जनता और जनहित से बिल्कुल अलग हो जाना है। अफसरशाही में पड़ कर जनता पर कुछ रौब आतङ्क जमाना जरूरी हो जायेगा, जिससे मेरी सेवा भावनी आत्मा को अपार कष्ट होगा।

इसी प्रकार उन्होंने आई. पी. ऐस. के विषय में भी सोचा। यह पुलिस सर्विस भी उन्हें ठीक न जँची। इसमें जाने पर तो मनुष्य और भी दास वृत्ति का हो जाता है। वह इस सीमा तक अराष्ट्रीय तथा असामाजिक हो जाता है कि अनेक बार सरकार के लाभ के लिये जनता की उचित आवाज तथा अधिकारों का हनन करना पड़ता है। देश भक्त तथा देश हितैषियों पर अत्याचार करना, करवाना पड़ता है। उस ओर जाना तो मनुष्य की आत्मा और भी पराधीन होकर अपना स्वतन्त्र अस्तित्व खो बैठती है। न्याय क्षेत्र की ओर जाने पर भी उन्हें इसी प्रकार की कमियां तथा त्रुटियाँ दिखलाई दीं।

इस प्रकार बहुत समय तक गम्भीरतापूर्वक विचार करने के बाद उन्हें अपने लिए इन्जीनियारङ्ग की दिशा ही उपयुक्त मालूम हुई। उन्होंने सोचा यह विशुद्ध रूप से निर्माण कार्यों से सम्बन्धित क्षेत्र होता है। इसमें जनता पर आतङ्क अथवा भय डालने की आवश्यकता नहीं होती। इस विभाग द्वारा जो भी काम किये जाते हैं, वे सब किसी न किसी प्रकार जनता के लिये हितकारी ही होते हैं। इसमें जाकर लोग सरकार को अपना मौलिक परामर्श दे सकता है। आवश्यक निर्माणों को कार्यान्वित करने के लिये योजनायें प्रस्तुत कर सकता है। साथ ही इसमें नियुक्त व्यक्ति केवल बङ्गलों अथवा दफ्तर में कुर्सी पर बैठे बैठे ही काम नहीं करते बल्कि उन्हें निर्माण स्थलों पर मजदूरों तथा कारीगरों के बीच रहकर परिश्रम भी करना पड़ता है। इस क्षेत्र में सार्थक तथा ठोस काम करने का अवसर रहता है जिससे परिश्रम के साथ संयुक्त होकर कमाई पवित्र तथा ग्राह्य हो जाती है। साथ ही काम करते-कराते समय अपनी आत्मा को यह सन्तोष रहता है कि मैं देश निर्माण के एक उपयोगी काम में लगा हुआ हूँ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org



इसके साथ ही उन्होंने सोचा कि देश में तकनीकी व्यक्तियों की बहुत कमी है। निर्माण कार्यों के लिये विदेशों से इन्जीनियर बुलाने पड़ते हैं। जिन पर न केवल अधिक खर्च ही होता है बल्कि पर निर्माण का भाव भी बढ़ता है। एक दिन देश स्वतन्त्र होना ही है और उसका निर्माण भी। ऐसे अवसर पर अधिक से अधिक इन्जीनियरों तथा तकनीकी आदमियों की आवश्यकता होगी। यदि अभी से शिक्षित लोग इस क्षेत्र की ओर बढ़ने लगें तो आगे चल कर वे पर्याप्त संख्या में उपलब्ध हो सकेंगे। पढ़ लिखकर युवक अधिक से अधिक इन्जीनियरिङ्ग क्षेत्र में जायें इसकी प्रेरणा देने के लिये मुझे स्वयं भी उसी क्षेत्र की ओर जाना चाहिये। इस प्रकार खूब गहराई से सोचने विचारने के बाद श्री ठक्कर बापा मैट्रिक पास करके इन्जीनियरिङ्ग का कालिज में भरती हो गये और अच्छी श्रेणी में पास होकर बी. जी. जे. पी. रेलवे में असिस्टेन्ट इन्जीनियर होकर नियुक्त हो गये।

उन दिनों एक नई रेलवे लाइन निकाली जा रही थी। ठक्कर बापा को काम करने कराने के लिए उसी पर नियुक्त किया गया था। रेलवे लाइन के क्षेत्र में बहुत से खेत तथा बाग खलिहान पड़ने स्वाभाविक थे। किसानों को अपनी-अपनी जमीन की चिन्ता पड़ गई, और वे उसे बचाने की चिन्ता करने लगे। इसके लिये उन्हें केवल एक ही उपाय सूझ पड़ा—वह यह कि यदि नियुक्त इन्जीनियर को किसी प्रकार पक्ष में किया जा सके तो वह नक्शे में कुछ संशोधन कर हमारी जमीन बचा सकता है।

क्षेत्र के बहुत से किसान एकत्र हुए और उन्होंने परामर्श करके एक अच्छी खासी धनराशि रिश्वत देने के लिये इकट्ठी की और उसे लेकर ठक्कर बापा के पास गये। उन सबों ने अपनी इच्छा प्रकट करते हुए रुपयों की थैलियाँ उनके सामने रक्खीं। ठक्कर बापा ने सबकुछ ध्यान से देखा सुना और शान्त भाव से उन्हें समझाया। मैं उन इन्जीनियरों में से नहीं हूँ जो रिश्वत लेकर के जनहित के कामों में बाधा डालते हैं मैं सरकारी नौकरी भी देश की सेवा की भावना से करता हूँ और अपने कर्तव्य की दिशा में जो कुछ सोचता हूँ उसमें सार्वजनिक हित सन्निहित रहता था। मानिये मैं आप लोगों से रिश्वत लेकर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org



रेलवे लाइन को टेड़ा करा दूँ और आपके खेत बचा दूँ तब भी तो यह समस्या हल नहीं होती। यदि आप लोगों के खेत बच जायेंगे तो किन्हीं दूसरे के खेत लाइन के क्षेत्र में पड़ जायेंगे। उन लोगों को भी आपकी तरह अपनी जमीन की चिन्ता होगी वे भी इसी तरह थैलियाँ लेकर मेरे पास आयेंगे। इस प्रकार मैं किस-किस की जमीन बचा सकता हूँ। लाइन निकलनी ही है और किसी-न-किसी के खेत उसमें पड़ने ही हैं। इसलिये यदि संयोगवश आप लोगों के खेत लाइन में आ गये हैं तो आप सबको सार्वजनिक हित में सन्तोष ही करना चाहिये। मनुष्य का कर्तव्य है कि वह केवल अपना ही लाभ न देखे बल्कि सार्वजनिक हित का महत्त्व भी समझे। यदि इस प्रकार समाज के सारे लोग केवल अपना लाभ देखते हुए सार्वजनिक हित की ओर से आँख बन्द करलें तो जल्दी ही समाज की सारी व्यवस्था बिगड़ जाये और उस दशा में हम आप सब समान रूप से असुविधा तथा कष्ट के शिकार बन जायेंगे। व्यक्तिगत लाभ से सार्वजनिक हित अधिक श्रेयस्कर है। उसमें सबको ही सुख-सुविधा का अवसर रहता है जब कि व्यक्ति गत स्वार्थ में किसी एक व्यक्ति को ही सन्तोष वह भी झूँठा सन्तोष होता है। हम सब सामाजिक लोग हैं इसलिये सामाजिक दृष्टि से ही हर बात पर विचार करना चाहिये। केवल स्वार्थ की ओर देखते रहना मनुष्यता का लक्षण नहीं है। और सार्वजनिक हित का घात कर स्वार्थ का साधन तो पशुता से भी नीचे गिरी बात है।

आप सभी जानते हैं कि इस समय जिस प्रकार लाइन निकाली जारही है वह बिल्कुल सीधी जा रही है। उसका नक्शा बदलने पर वह टेढ़ी मेढ़ी हो जायगी। ऐसी दशा में देश का बहुत धन व्यर्थ होगा और यात्रा के लिये भी असुविधा पड़ जायगी। सीधी लाइन चली जाने से गन्तव्यों के फासले कम रहते हैं किन्तु जब रेलवे लाइन टेढ़ी करके घूम फिराकर निकाली जाती है तो स्थानों की दूरी बहुत बढ़ जाती है। लोगों को यात्रा करने में समय भी अधिक लगता है और किराया भी ज्यादा देना होता है और यह अपव्यय सदा सर्वदा के लिये चलता रहता है। जिससे प्रतिवर्ष राष्ट्र का करोड़ों रुपया बेकार चला जाता है। किसी के व्यक्तिगत हानि लाभ से यह अपव्यय लाखों गुना होता है

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org



जो निश्चय ही एक विचारणीय विषय है। इसलिये आप सबसे मेरा निवेदन है कि सब लोग अपना पैसा ले जायें और हितकर कामों में खर्च करें। जमीन के विषय में सोच कर यह सन्तोष करलें कि सार्वजनिक हित में यदि हमारी थोड़ी सी जमीन चली गई तो कोई बात नहीं इससे सारे देश का लाभ तथा हित होगा। लोग देश धर्म के लिये अपना सर्वस्व दे डालते हैं तो क्या हम लोग इतना सा त्याग सहन नहीं कर सकते। आशा है आप लोग मेरी बातों का सार समझेंगे और खुशी-खुशी घर चले जायेंगे। ठक्कर बापा की सार गर्भित बातें सुनकर सभी किसान सन्तुष्ट होकर चले गये।

हाथ में आये हजारों रुपये की धन राशि ठुकरा देने वाले ठक्कर बापा के पूर्व जीवन पर यदि दृष्टि डाली जाये तो उनकी इस चारित्रिक दृढ़ता का मूल्य और बढ़ जाता है। जहां लोग घर से सम्पन्न होने पर भी पढ़ लिखकर जब सार्वजनिक सेवाओं में जाते हैं और रिश्वत तथा भ्रष्टाचार से अपनी जेबें भरने में सङ्कोच नहीं करते। इसी इन्जीनियरिंग विभाग में न जाने कितने लोग ठेकेदारों से मिलकर सार्वजनिक निर्माणों में गोलमाल किया करते हैं। रिश्वत लेकर चौथ तथा कमीशन तय करके ठेकेदारों को घटिया माल मसाला लगाने की छूट दे देते हैं। कम काम के लिए ज्यादा पैसों का बिल पास कर देते हैं। न पास होने वाले कामों को पास कर देते हैं। और इस प्रकार राष्ट्र को स्पष्ट धोखा देते रहते हैं। उनकी मृतात्माओं में यह चेतना नहीं रहने वाली है कि जिन सार्वजनिक निर्माणों को वे करवा रहे हैं इनके दृढ़ तथा स्थायी होने में ही सबका कल्याण है कमजोर तथा पोले निर्माण जल्दी ही नष्ट हो जाते हैं जिससे राष्ट्र की बहुत बड़ी सम्पत्ति की क्षति होती है। दुर्घटनाएँ तथा ध्वंस की विभीषिकायें उपस्थित होती रहती हैं। इस प्रकार चोरी करना और करवाना भयानक राष्ट्र द्रोह है। किन्तु स्वार्थी लोग इस पाप को करते जरा भी नहीं डरते और आये दिन अपने भ्रष्टाचार से लोक परलोक का विनाश करते रहते हैं। वहाँ ठक्कर बापा ने सच्ची राष्ट्रीयता तथा सार्वजनिक हित की गरिमा की रक्षा की और कठिन परिस्थितियों का जीवन यापन करते हुए भी अपने चरित्र का प्रमाण प्रस्तुत किया।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org



हजारों रुपयों की धनराशि ठुकरा देने वाले ठक्कर बापा का जन्म एक बहुत ही गरीब परिवार में हुआ था। इनके पिता की ऐसी स्थिति न थी कि वे उन्हें थोड़ा बहुत भी पढ़ा सकते। किन्तु स्वावलम्बन की भावना रखने वाले ठक्कर बापा ने उस आर्थिक असुविधा को अपनी शिक्षा में बाधक नहीं बनने दिया। उन्होंने अध्ययन में घोर परिश्रम किया। एक समय आधा पेट भोजन किया। प्रकाश के अभाव में चाँदनी में बैठकर अपना पाठ याद किया। काफी किताबों का खर्च निकालने के लिये बच्चों को पढ़ाया और बहुत से छोटे-मोटे काम किए। किन्तु अपनी शिक्षा की प्रगति नहीं रुकने दी और आखिर मैट्रिक की परीक्षा प्रथम श्रेणी में पास कर इन्जीनियरिंग की डिग्री प्राप्त की। जिन ठक्कर बापा ने ऐसी गरीबी तथा कठिनाई में अपनी शिक्षा पूरी की और जीवन यापन किया उन्होंने हाथ में आई हुई हजारों रुपयों की धनराशि ठुकराकर जिस चरित्र का प्रमाण प्रस्तुत किया वह वास्तव में सबके लिये ही अनुकरणीय है।

ठक्कर बापा के इस चारित्रिक उदाहरण ने विभाग के लोगों पर प्रतिकूल प्रतिक्रिया घटित की। विभाग के लोग भ्रष्टाचार से बुरी तरह ग्रसित थे। उनकी आत्मा मर चुकी थी, उनकी राष्ट्रीय तथा सामाजिक सद्भावना निरस्त हो चुकी थी गर्हित लाभ के कारण उनके संस्कार विकृत हो चुके थे। जिस प्रकार उलूक को दिन का प्रकाश प्रतिकूल अनुभव होता है उसी प्रकार विभाग के भ्रष्टाचारी लोगों को ठक्कर बापा का वह उज्ज्वल चरित्र अपनी भ्रष्ट परम्परा के विरुद्ध दिखाई दिया। उन्होंने सोचा कि यह विलक्षण व्यक्ति विभाग में अभ्रष्टाचार का प्रवर्तन करेगा, जिससे हम सबको ठेकेदारों से होने वाली आय समाप्त हो जायेगी। निदान पहले तो उन्होंने ऊँच नीच समझा कर बापा को अपनी रीति नीति में दीक्षित करना चाहा किन्तु जब वे भ्रष्टाचार में भागीदार होने को सहमत न हुए तब उनके विरुद्ध तरह-तरह के षडयंत्र करने शुरू कर दिये। उनके ठीक और अच्छे काम में कमी और त्रुटियाँ निकालनी प्रारम्भ कर दीं और उन पर तरह तरह के मिथ्या लांछन तथा अभियोग लगाने लगे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org



उनके साथ असहयोग करने और उखाडने का प्रयत्न करने लगे। ठक्कर बापा एक अजीब परेशानी में फँस गये।

वे सोचने लगे कि क्या कभी-कभी अच्छी बातों से भी बुराई पैदा हो जाती है? क्या भारतीय लोगों का यहाँ तक नैतिक पतन हो गया है कि जो एक व्यक्ति कोई आदर्श उदाहरण उपस्थित करे, जिसकी आत्मा पाप करने को तैय्यार न हो उसके साथ तिरस्कार तथा बहिष्कार का व्यवहार किया जाये। यह तो बड़े खेद तथा दुःख का विषय है। क्या अपना अस्तित्व एवम् स्थिति बनाये रहने के लिये भ्रष्टाचारी होना जरूरी है? क्या इस काजल की कोठरी में निष्कलुष रहना सम्भव नहीं? इस प्रकार के न जाने कितने विचार ठक्कर बापा के मस्तिष्क में आते और हृदय में हलचल मचाते रहे। कुछ समय के लिये उनकी मानसिक शान्ति प्रभावित हो गई और वे उद्विग्न हो उठे। किन्तु यह हलचल की स्थिति अधिक समय तक न रह सकी। उनकी सत्यनिष्ठा ने प्रकाश दिया और वे सोचने लगे—

यही तो वह समय तथा स्थिति है जिसमें चरित्र की सच्चाई की परख हुआ करती है। यों तो सामान्य स्थिति में कोई भी अपने सिद्धान्त तथा चरित्र की रक्षा कर लिया करता है। शत प्रतिशत चरित्र वाला वही माना जायेगा जो मौत-जिन्दगी, हानि-लाभ और विरोध विधर्म के बीच उसकी रक्षा कर सके और तब तो वह चरित्र परिधि से बाहर निकल जाता है जब लाभात्मक चरित्र हानि को उठाने के लिये इस प्रकार विवश किया जाता हो कि किसी भी दृष्टि-कोण से वह उसका दोषी न ठहर सके। आज वही तो परीक्षा की घड़ी मेरे सम्मुख उपस्थित है। मैं इस परीक्षा में उतरूँगा और शत प्रतिशत अङ्कों के साथ उत्तीर्ण होऊँगा। मेरी निश्छल राष्ट्र भावना और अटय आत्म-विश्वास मेरी सहायता करेंगे।

ठक्कर बापा ने सीमान्त प्रयत्न किया कि लोग उन्हें समझने की कोशिश करें और उनके अभ्रष्ट चरित्र में जो सार्वजनिक हित सन्निहित है उसे ग्रहण करने को तत्पर हों। किन्तु जब उन्होंने स्थिति को असाध्य पाया तो कोई बखेड़ा करने के स्थान पर यही अच्छा समझा कि वहाँ से हट जाया जावे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org



अनावश्यक तथा अलाभ कर सङ्घर्ष में समय और शक्ति का ह्रास करना ठीक न समझ कर उन्होंने त्याग पत्र प्रस्तुत कर दिया ।

ठक्कर बापा के त्याग-पत्र की सूचना पाकर उनके इष्ट-मित्र तथा स्वजन सम्बन्धी उनके पास आये और परिस्थिति से समझौता करके त्यागपत्र वापस ले लेने का परामर्श दिया किन्तु ठक्कर बापा इसके लिये तैयार न हुए । लोगों ने समझाया कि आप एक ऐसे विभाग में हैं जिसमें रिश्वत और भ्रष्टाचार एक सामान्य बात बन गई है । आप यहाँ से नौकरी छोड़कर दूसरी जगह जायेंगे वहाँ भी यही परिस्थिति सामने आयेगी तब क्या करेंगे ? इसलिये हवा की दिशा देखकर काम करना चाहिए । आजीविका का प्रश्न है । इसमें भावावेश में काम नहीं करना चाहिये । आप स्वयं तो भ्रष्टाचार कर नहीं रहे हैं और न करना चाहते हैं । दूसरे लोग वैसा करने के लिये विवश कर रहे हैं । ऐसी दशा में आपको इसका पाप या दोष क्यों कर लग सकता है । सोच समझकर काम कीजिये और अपनी नौकरी की तरफ देखिये ।

ठक्कर बापा ने कहा—'ऐसी परिस्थितियों से समझौता कर सकना हमारे वश की बात नहीं है । जिस हवा के रुख से हमारी पटतर नहीं बैठ सकती और जिसको रोक सकना भी हमारे-वश की बात नहीं है, उससे दूर हो जाना ही ठीक है । किसी दूसरी जगह जाने पर भी यदि यही स्थिति सामने आयेगी तो मैं पुनः स्तीफा दे दूँगा और यदि देखूँगा कि इस विभाग में चारित्रिक सिद्धान्त की रक्षा सम्भव नहीं तो मैं विभाग का ही त्याग कर दूँगा । आजीविका के लिये मजदूरी कर लूँगा किन्तु ऐसी इन्जीनियरिंग से बाज आऊँगा जिससे राष्ट्रघात करने के लिये विवश होना पड़े ।

रेलवे विभाग को त्यागकर ठक्कर बापा बढ़वाण राज्य में मुख्य इन्जीनीयर होकर चले गये । वहां पर भी वही परिस्थिति सामने आई । कमीशन के नाम पर अधिकारियों को अप-आय का कुछ भाग देकर ठेकेदार लोग सार्वजनिक निर्माण में खूब मन मानी करते थे । राज्य के जन-निर्माण विभाग के एक ठेकेदार ने एक पुल का निर्माण अपने उसी ढङ्ग से कराया जिसकी परम्परा चली आ रही थी । कमीशन का रिवाज तो चल ही रहा था—किसी खौफ

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org



खतरे की बात ही न थी । निर्माण पूरा हुआ । ठक्कर बापा उसको देखने और जाँच करने गये । जाँच करने पर पता चला कि काम में बहुत-सी कमियाँ हैं । निदान ठक्कर बापा ने उसे फिर से बनाने और कमी दूर करने का आदेश दे दिया ।

दूसरे दिन ठेकेदार रुपया बाँधकर उनके घर गया और कहा—श्रीमान् जी आपका कमीशन उपस्थित है । पुल के लिये पास का प्रमाण-पत्र दे दीजिये । ठक्कर बापा उसका दुःसाहस देखकर दङ्ग रह गये और यह सोचकर दुःख से द्रवित हो उठे कि सार्वजनिक निर्माण के अधिकारी यहाँ तक गिर गये हैं कि एक ठेकेदार गलत काम को पास कराने के लिये मुख्य इंजीनियर से स्पष्ट रिश्वत का प्रस्ताव करने का साहस कर सकता है । जिस देश के उच्च अधिकारियों का यह हाल हो वह देश कैसे तो कोई तरक्की कर सकता है और कैसे विकास की दिशा में अग्रसर हो सकता है । इसे देश का दुर्भाग्य कहने के सिवाय और क्या कहा जा सकता है ।

राष्ट्र की दशा से दुःखी श्री ठक्कर बापा ने ठेकेदार से केवल यही कहा—चूँकि अधिकारियों ने आप सब के साथ मिलकर यह भ्रष्ट परम्परा प्रचलित की है । आप लोगों के संस्कार तथा साहस दूषित हो चुके हैं इसलिये आज की यह पहली धृष्टता क्षमा कर रहा हूँ । जाओ, मैं रिश्वत नहीं लेता, अपना काम ठीक करा दो । यही मेरी काफी रियायत है ।'

किन्तु भ्रष्ट ठेकेदार ने इसका दूसरा अर्थ लगाया । उसने समझा कि इन्जीनियर साहब कुछ अधिक पैसा चाहते हैं । निदान उसने रिश्वत की राशि बढ़ाकर पास के प्रमाण-पत्र का पुनः अनुरोध किया । ठक्कर बापा ने उसे पुनः समझाया और कहा—कह तो दिया कि मैं रिश्वत लेना पाप और राष्ट्रद्रोह समझता हूँ । तुम यह रुपया लगाकर काम ठीक करा दो इसी में हमारा आपका और राष्ट्र का कल्याण है । पुल सार्वजनिक प्रयोग की वस्तु है, इसमें जनता का पैसा लगा हुआ है । सवारी, पैदल, हाथी, घोड़े, मोटर, गाड़ी सभी उस पर से निकलेंगे उसका ठीक और पक्का होना कितना आवश्यक है इसको तो आप स्वयम् भी समझ सकते हैं । ऐसे सोच देखो, कि यदि आप अपना मकान बन-

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org





बायेंगे कि उसके किसी भी समय गिर जाने का डर और परिवार के सदस्यों के दुर्घटनाग्रस्त हो जाने का खतरा बना रहे। निश्चय ही आप ऐसा कदापि न करेंगे। इसी प्रकार समाज को भी अपना बड़ा परिवार समझो और निर्माण कार्यों में उसकी रक्षा तथा हित का ध्यान रखो।

किन्तु भ्रष्टाचार ने जिनकी बुद्धि मूर्ख बनादी हो तो वह ऐसे सदुपदेशों को क्या समझे और क्या उन पर महत्त्व दे। वह तो सदाशयताओं को कहने सुनने भर की बात मानता है। अस्तु, उसने पुनः रिश्वत की राशि बढ़ाकर दुराग्रह किया। धृष्टता सहिष्णुता तथा क्षमाशीलता की पराकाष्ठा हो चुकी थी। शान्त प्रवृत्ति ठक्कर बापा ने अब सहन करना मनुष्यता का घोर अपमान समझा और 'दण्डेन गो गर्दभो' वाली नीति के अन्तर्गत उसे ऐसा आड़े हाथों लिया कि उसे भागते ही बना। ठक्कर बापा ने उसका काम फेल कर दिया और ऊपर लिखकर उसे ठेकेदारों की सूची से निलम्बित कर दिया और इस सीमा तक सख्ती की कि न केवल उस धृष्ट व्यक्ति को ही समुचित दण्ड मिल गया बल्कि और लोगों के भी कान खड़े हो गये। तथापि, भ्रष्टाचारियों की भीड़ में एक सत्पुरुष अपनी यह स्थिति सुरक्षित न रख सका और उसे सिद्धान्त रक्षा में पुनः नौकरी की भेंट दे देनी पड़ी। कष्ट पर कष्ट आपत्ति पर आपत्ति आ रही हैं, आसुरी परिस्थितियों के दाव घात चल रहे हैं। परीक्षा पर परीक्षा हो रही है किन्तु वह देवपुरुष हार मानने को तैय्यार नहीं। अपने पवित्र सिद्धान्त की रक्षा में उसी प्रकार तत्पर है जिस प्रकार आपत्ति ग्रस्त मां अपने बच्चे की रक्षा में तत्पर रहती है।

जिन दिनों ठक्कर बापा पोरबन्दर राज्य में इन्जीनियर के पद पर कम कर रहे थे उन्हीं दिनों वहां भयङ्कर अकाल पड़ा। लाखों आदमी और जानवर भूखों मर गये। लोगों ने पेट की ज्वाला शान्त करने के लिये पेड़ के पत्ते और छाल तक खा डाले। अकाल पीड़ितों की सहायता करने के लिये ठक्कर बापा ने राज्य के अधिकारियों को प्रेरित कर भादर पुल का निर्माण आरम्भ करा दिया। इस निर्माण कार्य में ठक्कर बापा का उद्देश्य यह कहा गया था कि लोग काम में लगे रहने से उस अकाल की भयङ्करता को बहुत कुछ भूले

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org



रहेंगे। क्यों कि आपत्ति का चिन्तन आपत्ति के भय तथा व्यय दोनों को बढ़ा देता है। बेकारी में पड़े रहने से अनावश्यक तथा मिथ्या भूख की भी वृद्धि हो जाती है। कर्म में व्यस्त रहने पर लोग उस मिथ्या क्षुधा तथा अभाव के अकल्याणकारी गठ बन्धन से बचते रहेंगे इससे उनको अकाल का त्रास अधिक होकर न सता सकेगा और सबका साहस भी बना रहेगा। साहस के बने रहने पर लोग बहुत बार मौत से लड़ कर भी सुरक्षित निकल आते हैं। साथ ही वह पुल भी बनना बहुत आवश्यक था। इस प्रकार बुद्धिमान् ठक्कर बापा ने कुकाल से सुलाभ उठाकर दो आवश्यक काम बना लिये। बेकारी और सार्वजनिक निर्माण का संयोग करा देने से काम थोड़े में अच्छे से अच्छा हो जाता है और किसी को शिकायत का भी अवसर नहीं रहता।

किन्तु संयोग-वश वह हितकर योग ठक्कर बापा के लिए मार्मिक दुःख का कारण बन गया जिसने उनके जीवन की दिशा ही बदल दी। अकस्मात् एक मजदूर और उसकी पत्नी का देहान्त हो गया। वे अपने पीछे तीन बच्चे छोड़ गये। उनमें से एक बच्चा लगभग तेरह साल का, एक सात साल का और एक बहुत छोटा तीन चार माह का होगा। उन बच्चों का दुनिया में और कोई नहीं था। बेचारे दो बड़े भाई किसी प्रकार दुनियाँ में जी भी सकते थे किन्तु उस अबोध शिशु को वे किस प्रकार पाल सकते थे। उनके सामने एक भयङ्कर समस्या खड़ी हो गई। छोटा शिशु बुरी तरह माँ के लिये रोता, चिल्लाता और स्तन पीने के लिए तड़पता। किन्तु उस समय उस दुष्काल में कोई भी उन अनाथों की तरफ ध्यान देने वाला नहीं था। दोनों बच्चे घबड़ा उठे और उन्हें अपना वह अबोध शिशु भार बन गया। भूख और भावावेश की भयङ्करता से, बच्चे ही तो थे, अपना मानसिक सन्तुलन खो बैठे और भार स्वरूप अपने छोटे भाई से छुटकारा पाने के लिये उसे एक गड्ढा खोद करके जीवित ही उसमें गाड़ दिया।

इस भयानक घटना की सूचना ठक्कर बापा को मिली और वे दौड़े-दौड़े घटना स्थल पर आये। जल्दी से मिट्टी हटवा कर बच्चे को निकलवाया। लेकिन व्यर्थ, वह खुद मिट्टी हो चुका था। ठक्कर बापा उस निरीह शव को देख

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org



कर आँसुओं से रो उठे। उनकी सम्पूर्ण मानवता कातर करुणा से आप्लावित हो उठी। उन्हें ऐसा लगा मानो उनका अपना बच्चा मिट्टी में मिला पड़ा है। मन ही मन आहत हो वे कह उठे—यदि मैं समय से पहुँच सका होता तो इस मातृ-पितृ हीन बालक को अपनी छाती से लगा लेता और इस प्रकार इसको मनुष्यता पर व्यंग करने वाली मौत न मरने देता। कितने दुःख का विषय है कि इस भरी दुनियाँ में, केवल माँ-बाप के न रहने पर इस दुधमुँहे का कोई नहीं रह गया। क्या संसार में रक्त सम्बन्धों के सिवाय मानवता का कोई नाता ही नहीं ? यदि समाज में सब, सबको अपना स्वजन और सम्बन्धी समझ सकते तो मानवता की यह दशा न होती और इस प्रकार अबोध भाई, भाइयों के हाथ से, निराश्रय की निराशा से जिन्दा न दफनाए जाते। एक की आपत्ति में दूसरा हाथ बटा सकता तो यह संसार इतना भयावह और शङ्कास्पद न बना रहता। यहाँ भी देवताओं के देश जैसा सुख सन्तोष और विश्वास का वातावरण दिखाई देता। लोग हँसते-हंसते जी भर जीते और कुशल-क्षेम के साथ संसार से बिदा हो जाते। बहुत समय ठक्कर बापा उस शिशु-शव को लिये इसी प्रकार सोचते और रोते रहे। जब वे फिर उसे धरती को सौंप कर उठे तो बाहर से यथावत् दीखने वाला उनका जीवन अन्दर से बिल्कुल बदल चुका था। उन्हें वैराग्य हो चुका था किन्तु गेरुआ वैराग्य नहीं और न पलायन वादी वैराग्य, बल्कि वह वैराग्य जिसे समाज-सेवा में आत्म-विसर्जन कह कर अवगत कराया जा सकता है। दीन दुखियों के प्रति उनकी आन्तरिक करुणा ने उन्हें मानव से महामानव बना दिया और आगे चलकर उन्होंने अपनी करुणा को किस सीमा तक चरितार्थ किया उसका अनुमान इसी बात से लगाया जा सकता है कि एक बार उनकी सेवा भावना देखकर युग पुरुष महात्मा गाँधी ने कहा था—'यदि मैं भी बापा जैसी सेवा और भावना पा जाता तो अपने को धन्य मानता।"

इन करुण तथा सेवा की प्रतिमूर्ति ठक्कर बापा का पूरा नाम अमृतलाल विट्ठलदास ठक्कर था। उनका जन्म सौराष्ट्र के भाव नगर में २९ नवम्बर सन् १८६९ में हुआ था।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org



शिशु-समाधि की उस घटना ने ठक्कर बापा के सम्मुख समाज का करुणामय चित्र उपस्थित कर दिया उन्हें अपनी व्यक्तिगत सुविधायें काँटे की तरह कसकने लगीं वे दिन रात यही सोचा करते थे कि जिस समाज के बहु-संख्यक लोग भूखे और नंगे रहकर अपनी जीवन-परिधि को पार करते हैं वहाँ हम जैसे कतिपय व्यक्तियों को सुविधापूर्वक रहने का क्या अधिकार है और क्या ही अधिकार है निश्चिन्त नींद का आनन्द लेने का जब कि दीन-दुखियों की कातर पुकार कानों के आस-पास ही निरन्तर भड़क रही हो। जिसके समाज में निरक्षर और निराश्रित लोगों की विवशता शिक्षितों और साधन-सम्पन्न लोगों की सहायता और सहानुभूति की राह देख रही हो वहां सभ्यता और ज्ञान के नाम पर अपने तक सीमित रहने की संकीर्णता जीवन की विडम्बना के सिवाय और कुछ नहीं है। उन्होंने अपना अधिकांश समय और आय समाज सेवा में लगाने का संकल्प कर लिया।

उसी दिन ठक्कर बापा ने कोट व पतलून के स्थान पर धोती कुरता को ग्रहण कर लिया और हैट के स्थान पर एक साधारण-सी टोपी। उनकी अल्पा-वश्यकतायें अति अल्प हो गई और वे ठीक वैसा ही अभावपूर्ण जीवन-यापन करने लगे जिस प्रकार का जीवन भारत के सामान्य लोगों को उपलब्ध है। इस महान् मितव्ययता के आधार पर वे जितना जो कुछ बचाते गरीबों की सहायता और समाज की सेवामें लगा देते हैं। नौकरी से बचा हुआ उनका सारा समय अनाथों, अशिक्षितों, तथा पिछड़े वर्ग के लोगों के ही बीच में अधिकतर व्यतीत होता था।

ठक्कर बापा को जब भी जो समय मिलता उसमें वे उस ओर निकल जाते जिधर हरिजन और निम्न स्तर के लोग रह रहे होते कहीं वे बच्चों की पाठशाला लगाते तो कहीं उनकी बस्तियों की सामूहिक सफाई में लगे रहते। एक स्थान पर यदि वे कोई पुस्तक सुनाते तो दूसरे स्थान पर लोगों को घेरे बटोरे नशों और व्यसनों की हानियाँ समझाते। यदि एक जगह वे झगड़ा निपटा कर आते तो दूसरी जगह पंचायत की अध्यक्षता करने जाते। कहाँ किस बस्ती में किसके घर बालक, वृद्ध अथवा स्त्री-पुरुष बीमार हैं किसको किस समय कौन

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org


सी दवा देनी है इस बात को ठक्कर बापा कभी न भूल ते थे। बापा की इन सेवाओं ने उन्हें इतना जन-प्रिय बना दिया कि लोग उनकी उत्सुकता के साथ प्रतीक्षा करते रहते। लोग जिस हरिजन बस्ती में सफाई और बच्चों को पाटी बोदिका लिये देखते, समझ जाते कि इधर ठक्कर बापा के पवित्र चरण पड़ चुके हैं।

देश के किसी भी कोने से पीड़ित मानवता की पुकार आते ही ठक्कर बापा तुरन्त ही उधर चल पड़ते थे और अपनी सम्पूर्ण शक्ति और साधन के साथ उनकी सहायता करते थे। उस समय, जब गुजरात के पञ्चम हाल जिले में अकाल पड़ा तब ठक्कर बापा के सेवा कार्य देखकर लोगों को अपनी अकरुणा अकर्मण्यता पर बड़ी लज्जा आई और दल के दल लोग उनके साथ सेवा कार्य में लग गये। देश के कोने-कोने से अकाल पीड़ितों की सहायता के लिये अन्न, वस्त्र और पैसे आने लगा।

अकाल का समाचार पाते ही ठक्कर बापा दौड़े पञ्चमहाल के पीड़ित इलाके में गये और भूखों मरती मानवता को देखकर रो उठे। उन्होंने तत्काल गले में एक झोली डाली और एक सज्जन से गाडी मांगी और अकाल पीड़ितों के लिये सहायता इकट्ठी करने के लिए उस पथरीले तथा ऊबड़-खाबड़ प्रदेश में भिक्षाटन पर चल दिये। वे द्वार-द्वार जाते, झोली फैलाते और कहते डालिये, अकाल पीड़ितों की सहायता के लिये इस झोली में कुछ डालिये और जो कुछ अन्न-वस्त्र आदि कि सहायता कर सकते हों करिये। मनुष्यता सङ्कट में है, मानवता भूखों मर रही है वह आप से यथासाध्य सहायता की अपेक्षा कर रही है। लोग उस व्यक्तित्ववान् मनुष्य को इस प्रकार याचना करते देखकर पहले तो कुछ न कुछ देते फिर यह पता लगाने के लिये उत्सुक होते कि आखिर यह भद्र भिखारी है कौन ? जब लोगों को यह पता चलता कि यह बड़े भारी इन्जीनियर हैं। एक बड़े सरकारी ओहदे पर थे और पाँच-सौ रुपये तनखा पाने के साथ इनके पास बङ्गला और मोटर कार भी थी किन्तु इन्होंने वह सब दुःखी मनुष्यों की सेवा करने के लिये छोड़ दिया और फकीरी लेली है। इनका नाम ठक्कर बापा है। वह बड़े दयावान् देवता आदमी हैं और इस समय पञ्च-

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org



महाल के अकाल पीडित लोगों की सहायता के लिये भोजन वस्त्र इकट्ठा करने के लिये निकले हैं। ठक्कर बापा की त्याग, तपस्या तथा सेवा की गाथा सुनकर लोग स्वतः उनके प्रति नत मस्तक और उदारहस्त होने लगे। उनके उस परमार्थ पर्यटन की सूचना जब एक गाँव से दूसरे गाँव जाती तो लोग घर-घर उनके आने की प्रतीक्षा करते और सोचते कब उस देव पुरुष की फेरी इधर लगे और कब वे क्या कुछ देकर अपने को धन्य समझें। जिनकी किसी आवश्यक काम से बाहर जाना हो तो वे घर पर कह जाते कि जब ठक्कर बापा इधर आयें तो उन्हें अमुक-अमुक चीजें दे देना। जिनके पास देने को कुछ नहीं होता वे उनके साथ शारीरिक सेवा करने को तैयार हो जाते। इस प्रकार ठक्कर बापा के पुण्य प्रयास से अकाल पीड़ितों के लिये सहायता की कमी न रही। वे जिधर जाते उधर से ही झोली और गाड़ी भरे हुए चले आते! ठक्कर बापा के इस अभूत पूर्व सेवा कार्यों की सूचना देश के कोने-कोने में फैलते देर न लगी और साधारण गृहस्थों से लेकर धनवान् व्यक्तियों ने अपने हृदय तथा भण्डार खोल दिये। आये दिन ठक्कर बापा के पास धन, धनादेश, अन्न तथा वस्त्र आने की परम्परा लग गई। जिधर से देखो उधर से ही दल-के-दल स्वयं सेवक ठक्कर बापा की जय बोलते चले आ रहे हैं। जल्दी ही सहायता शिविरों और सेवा सङ्घों की व्यवस्था हो गई और अकाल पीड़ितों की सहायता में उस दुष्काल के विरुद्ध मनुष्यता का नियोजित संग्राम छिड़ गया।

सेवा सहायता में ठक्कर बापा किसी पर निर्भर नहीं रहते थे। वे स्वयं गाड़ी में अन्न-वस्त्र भरकर गाँव-गाँव पीड़ितों को बाँटने जाते। वे सबेरे से लेकर शाम तक भाग-दौड़ करते रहते थे। सूरज कब निकला, दोपहर कब आई और कब चली गई और संध्या कब, रात्रि के रूप में बदल गई ठक्कर बापा को इसका ज्ञान न हो पाता था। वे समग्र चेतना से केवल इसी तत्परता में लगे रहते थे कि आज के दिन ऐसा एक भी व्यक्ति न बचे जिसे भोजन न पहुँच सके। दूसरों की चिन्ता में वे अपनी भूख-प्यास को भूले रहते थे। जब कोई उन्हें याद दिलाता कि आज अभी तक उन्होंने भोजन नहीं किया तब उन्हें उसकी सुध आती। जब लोग बतलाते कि बापा अब तो रात बहुत हो गई है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org



सवेरे जल्दी उठता है, तब कहीं थोड़ी देर को वे जमीन से पीठ लगाते थे। कभी-कभी इसकी भी बारी नहीं आती थी।

दिन भर भूखों को भोजन और नङ्गों को वस्त्र बाँटकर जब ठिकाने पर आते थे तो सामान का हिसाब और अगले दिन की व्यवस्था बनाते थे किस क्षेत्र में किस वस्तु को बाँटा जाना है कितने आदमियों के लिये कितनी सामग्री पर्याप्त रहेगी इसका विभाजन करना और उसके लिये स्वयं सेवकों की नियुक्ति करना बापा का नित्य नियम से रात का काम था जिसमें उन्हें बारह एक से कम नहीं बजता था। इसके साथ ही वे स्वयम् सेवकों तथा कार्यकर्त्ताओं के भोजन शयन की भी व्यवस्था स्वयम् ही करते थे। उनको पूरा पता रहता था कि किस स्वयं सेवक ने अभी तक भोजन नहीं किया है। किसको किस समय भोजन कर लेना था और किस कारण से वह नहीं कर पाया इसकी पूरी खोज खबर रखते थे। किस पर काम का कितना बोझ होना चाहिये और उस पर कितना काम डाला गया है इसका पूरा पता रखने वाले ठक्कर बापा यह भी ध्यान रखते थे कि कार्यकर्त्ता तथा स्वयं-सेवकों को जरूरत भर आराम मिल रहा है या नहीं। अस्वस्थ हो गये स्वयं-सेवकों की देख-रेख करना समय पर उन्हें दवा देने के साथ वे उसकी आवश्यक सेवा सुश्रूषा का भी ध्यान रखते थे और उस व्यस्तता एवम् अस्तव्यस्तता की स्थिति में भी उसके पथ्य परहेज की भी व्यवस्था खुद रखते थे।

एक साथ इतना काम करने पर भी ठक्कर बापा दिन के बाद रात में किसी से अतिरिक्त काम कभी नहीं लेते थे। सामान्य सेवा-कार्यों के बाद जो भी आकस्मिक अथवा सामयिक काम होता था उसे वे स्वयम् अकेले ही करते थे। अनेक बार ऐसा हुआ कि जिस समय सब लोग सोने की तैयारी कर रहे थे और थकान से चूर यह सोच रहे थे कि कब चारपाई मिले। तभी बाहर से कपड़े की कुछ गाँठें आ गईं। उन्हें खोलना और नाप-नाप कर बाँटने के लिए कपड़ा फाड़ना होता था। किन्तु सोने की तैयारी में लगे कार्य-कर्ताओं को उन्होंने कभी भी काम में नहीं लगाया। सबके सोने का प्रबन्ध करके वे स्वयम् उस काम में लग जाते थे और कभी-कभी एक आसन से बैठे सबेरे तक कपड़ा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org



फाड़ते रहते थे। यदि कोई कहता भी बापा अब सो जाइये। यह काम प्रातः काल जल्दी उठ करके कर लिया जायेगा। तो वे यही कहते थे कि न, यह काम तो आज के ही खाते का है कल पर नहीं टाला जा सकता। यदि सबेरे के लिये इसे रखा गया तो वितरण का काम समय पर प्रारम्भ नहीं हो सकेगा और कार्यक्रम क्रम से विलम्ब होता चला जायेगा। जो काम जिस समय करना है उसमें प्रमाद करने का अर्थ है सारे कामों की व्यवस्था बिगाड़ देना—व्यवस्था से बाहर गये हुए काम कठिन तथा बोझिल बन जाते हैं। फिर उनको पूरा करने में अतिरिक्त श्रम तथा समय लगाना होता है जिससे मनुष्य की बहु बहुत सी शक्ति अपव्यापित हो जाती है जिसके द्वारा अन्य अनेक नये काम किये जा सकते हैं।

सबेरे के कार्यों का क्रम रात में ही बनाकर ठक्कर बापा पौ फटते ही वितरण करने के लिये दौरे पर चल देते थे। वे यह प्रतीक्षा नहीं करते थे कि सब लोग तैयार हो जायें तब एक साथ दल बनाकर चला जाये। वे सदैव समय पर अपने कर्तव्य पर तयनात हो जाते थे। ऐसा कदाचित् ही कभी होता था कि ठक्कर बापा की तैयारी हो गई हो और अन्य कार्यकर्ता अभी तैयारी के मार्ग पर ही हों। प्रायः सभी साथ ही सन्नद्ध हो जाते थे। जिनका अनुभव जितना नियमित तथा तत्पर होता है उसके अनुयायी स्वभावतः अविनम्री हो जाया करते हैं। तब भी यदि कभी किन्हीं द्वारा तत्परता में व्यतिक्रम हो जाता था तो वे किसी से कुछ कहते न थे। उनके निर्देश छोड़कर स्वयम् चल दिया करते थे।

वितरण के लिये गाड़ी में सामान को भर कर चलने के साथ बापा एक गठरी हमेशा अपने कन्धे पर लाद कर चलते थे। उसी में से चीजें बाटते चलते और जब एक गठरी का सामान चुक जाता तो दूसरी गठरी को फिर लाद लेते। वे गाँव में पहुँचकर एक स्थान पर गाड़ी को रोक देते और स्वयम् घर-घर जाकर लोगों का अपना भाग चुनकर ले आने का सन्देश दे आते थे—वे जाते और कहते—भाईजी आपका सेवक ठक्कर आ गया है अब आप लोग चलिये और सामान ले लीजिये। थोड़ी ही देर में गाड़ी के चारों ओर उनके

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org



पास भीड़ लग जाती और वितरण का काम शुरू हो जाता। बापा विनम्रता-पूर्वक सबको पंक्ति में खड़ा करते और क्रम से सब चीजें बाँटते। जिससे काम भी जल्दी निबट जाता और कोई गड़बड़ी भी नहीं होती। यदि कभी कोई आतुरता में पंक्ति का उल्लंघन भी कर जाता तो बापा उसे डाटते फटकारते नहीं थे बल्कि प्रेम से इस प्रकार समझा देते थे कि वह अव्यवस्था, धैर्य, पारी पारी तथा अनुशासन का महत्त्व समझ जाता था और फिर कभी कोई वैसा न करता था। इस प्रकार एक गाँव से दूसरे गाँव और दूसरे से तीसरे गाँव जा-जाकर बापा पड़ाव डालते और दसियों गांवों का दौरा पूरा करके जब निवास स्थान पर वापस लौट आते तो सबसे पहले कार्यकर्त्ताओं के लिये भोजन का प्रबन्ध करते। उस भोजन व्यवस्था में वे स्वयं हाथ बटाते और जब सब लोग खा-पी चुकते तब स्वयम् भोजन करते। लेकिन उनका व्रत था कि वे खुद उतना और उसी प्रकार का भोजन करते थे जितना और जिस प्रकार का किसी एक आदमी को देकर आते थे।

एक बार इसी वितरण कार्यक्रम में बापा को झालोद ताल्लुका के शङ्खपुर गाँव में जाना था। गाँव ऊँचाई पर बसा हुआ था। गाड़ी का जा सकना सम्भव न था। आबादी भी कुछ ज्यादा न थी। अस्तु बापा ने आवश्यक सामान की गठरी अपनी पीठ पर लादी और ऊँचाई पार करते हुए गाँव में पहुँच कर सामान बाँटने लगे। उस गाँव में उन्होंने लोगों को एक स्थान पर जमा करना जरूरी न समझा और स्वयं द्वार द्वार जाकर अन्न वस्त्र बाँटने लगे। इसी क्रम में वे एक झोंपड़ी के निकट पहुँचे। तभी द्वार पर खड़ी एक स्त्री उन्हें आता हुआ देख कर झोंपड़े में भाग गई और फटका लगा लिया। बापा द्वार पर पहुँचे और आवाज लगाई—माता! मैं आपका सेवक ठक्कर आया हूँ। अपना भाग ले लेने का कष्ट करें। किन्तु अन्दर से न तो कोई आया और ना ही किसी ने आवाज दी। बापा ने पुनः पुकारा तो भी कोई उत्तर न मिला। इसी प्रकार तीन-चार बार आवाज देने पर अन्दर से धीरे से आवाज आई—मैं बाहर किस प्रकार आ सकती हूँ। मेरा शरीर नङ्गा है। तन ढाकने के लिये एक चीथड़ा भी नहीं है। बापा ने आवाज सुनी और उन्हें ऐसा लगा कि उस

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org



ध्वनि के अन्दर एक प्रतिध्वनि और आ रही है—'मेरे पुत्रो ! मैं नङ्गी भूखी हूँ । मुझे भोजन वस्त्र दो ।' यह सुनकर बापा की आँखों से अश्रु बहने लगे । उन्होंने छप्पर की सन्धि से एक लेंहगा और ओढ़नी डाल दी । दो मिनट में एक प्रौढा लेंहगा और ओढ़नी पहन कर उन उपकार स्वरूप देवदूत के दर्शन करने बाहर आई । उसने बापा के वेश में द्वार पर खड़े किसके दर्शन किये—नहीं बताया जा सकता किन्तु बापा ने जरूर उस महिला-भूमि में भारत माता का प्रतिबिम्ब देखा जो नङ्गी भूखी दशा में अपने पुत्रों से भोजन वस्त्र की याचना करती है ।

इस प्रकार अनेक महीनों के अपरिमित परिश्रम तथा प्रयत्नों के बल पर ठक्कर बापा ने जनता जनार्दन की सहायता से उस दुष्काल पर नियन्त्रण पा लिया और जल्दी ही वहाँ का जन जीवन सामान्य गति से चल निकला । ठक्कर बापा ने पुनः परिस्थिति देखने के लिये पैदल ही पूरे क्षेत्र का दौरा किया और पाया कि यह वस्ती भीलों तथा आदि वासियों की है और यहाँ के लोग, गरीबी, अशिक्षा, अन्ध विश्वास तथा नशों व्यसनों के शिकार बने नारकीय जीवन बिता रहे हैं । उन्होंने अनुभव किया कि इस क्षेत्र को उनकी स्थायी सेवाओं की आवश्यकता है । निदान उन्होंने वहीं रहकर आदि वासियों तथा भीलों का जीवन सुधारने का निश्चय कर लिया । बापा ने सहायता शिविरों को उठवा दिया और सारा सामान तथा कार्यकर्त्ताओं को यथास्थान भेजकर अपना जीवन उन वन वासियों की सेवा में समर्पित कर दिया ।

सबसे पहले बापा के उन भीलों को एक सूत्र में बांधने के लिये 'भील-सेवा-सङ्घ' बनाने का निश्चय किया । इस उद्देश्य के लिये वे गाँव-गाँव घूमे और लगभग सभी व्यक्तियों से मिले । उन्होंने गाँव-गाँव में सभायें की और उनमें सङ्गठन तथा आत्म सहायता का महत्त्व बतलाया । उन्होंने भील नौजवानों को अपने वर्ग का सुधार करने के लिये प्रेरित किया और मार्ग-दर्शन कराया । बापा के पूर्व सेवा कार्य एक तो यों ही भीलों को प्रभावित कर चुके थे और अब, जब उन्होंने यह पता चला कि बापा उन्हीं के बीच रहकर उनके हित के लिये काम करेंगे तब तो वे सब उनके अनुयायी बन गये और हर वक्त वह काम

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org



करने के तत्पर हो गये जो बापा ने अवसर पाकर 'भील-सेवा संघ' की नींव डाली जो जल्दी ही विकास की ओर अग्रसर हो चला।

बापा ने कुशाग्र बुद्धि भील नौजवानों का सङ्कलन किया और उन्हें प्रयत्न एवम् परिश्रमपूर्वक कुछ ही महीनों में स्वयं अपने आप पढ़ाकर साक्षर बनाया। फिर उन्होंने भील बालकों के लिये छोटी-छोटी पाठशालायें खोलीं और उनमें अपने तैय्यार किए हुए नौजवानों को अध्यापन के काम पर नियुक्त किया। इस प्रकार उन आदि एवम् बन वासियों के बीच युग युगान्तर के बाद ज्ञान का छोटा-सा दीपक टिमटिमाने लगा। इधर बापा ने एक प्रौढ पाठशाला चलाकर उसका काम अपने जिम्मे ले लिया। इस प्रौढ पाठशाला में वे भीलों को जितना अक्षर ज्ञान कराते थे उससे अधिक उन्हें अपना सुधार करने तथा नशों और व्यसनों को छोड़ने के लिये उपदेश दिया करते थे। स्त्रियों के सुधार कार्यक्रम में उन्होंने चरखा कातने की प्रमुखता दी साथ ही वे उनके उन हस्त-शिल्पों को सामूहिक रूप में चलवाने लगे जो भील बालायें जानती थीं। उनमें से ताड की चटाइयाँ सेंठे और नरकुलों के खिलौने, कांस तथा कोथ के छाबे आदि चीजें बनाई जाने लगीं। इस सामूहिक कार्यक्रम का एक सबसे बड़ा लाभ यह हुआ कि स्त्रियाँ जो सदैव आपस में लड़ा करती थीं अब प्रेमपूर्वक रहने लगीं।

ठक्कर बापा ने भीलों में नैतिकता, स्वच्छता, तथा, सामाजिकता की चेतना जाग्रत करने के लिये एक 'भील आश्रम' की स्थापना की। इस आश्रम की सदस्यता का नियम रक्खा गया और अधिकतर उन्हीं लोगों को सदस्य बनाया जाता था जो प्राय प्रौढता से पार हो चुके थे और अधिकतर घरों में बेकार पड़े रहते थे। बापा नित्य सायंकाल तथा प्रातःकाल वृद्ध भीलों को इकट्ठा करते और प्रार्थनायें कराने के साथ उन्हें अच्छे-अच्छे व्याख्यान सुनाते। इसके अतिरिक्त वे साप्ताहिक जीवन भजन, तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम चलाते। इन कार्यक्रमों के अवसरों पर जब भील तरुण-तरुणियाँ सामूहिक रूप से मोरपंखों से सजकर नाचते गाते तब ऐसा प्रतीत होता था मानो इन सब का एक अलग ही संसार है और इनकी भी एक अपनी संस्कृति है। भील जब सामूहिक रूप

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org



से अपनी जंगली भाषा में बापा को भजन तथा गीत सुनाते थे तो वे अपना पन भूलकर उनके साथ एकाग्र हो जाते थे। इन्हीं सामूहिक कार्यक्रमों के आनन्द अवसर पर बापा उन सबकी एक बैठक करते और क्षेत्र तथा घरों की सफाई का कार्यक्रम बताते जो कि दूसरे दिन कार्यान्वित कर दिया जाता। इस प्रकार बाल तथा प्रौढ़ पाठशालाओं, आश्रम, सामूहिक शिल्प तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमों द्वारा बापा ने भीलों की सभ्य चेतना का संचार कर दिया जिससे वे अपेक्षा कृत अधिक साफ शुद्ध तथा प्रबुद्ध बनने लगे। बापा उनकी होती हुई मानसिक तथा शैक्षणिक उन्नति को देख देखकर अपने मन ही मन में बड़े ही प्रसन्न होते रहते थे।

भीलों के विकास से जहाँ ठक्कर बापा और उन जैसे समाज हितैषियों को प्रसन्नता होती थी, वहाँ अनेक ऐसे लोग भी थे, जिन्हें वह शुभ गति विधि देखकर ईर्ष्या और द्वेष होता था। ऐसे समाज विरोधी लोगों में देवगढ़बारिया के राजा और उसके हाँ-हुजूरों का मुख्य स्थान था। भीलों के विकास से द्वेष करने का कारण यह था कि उनका विकास हो जाने से उन लोगों को यह शङ्का सताने लगी थी कि अब तक भीलों के शोषण को जो सुविधा मिलती चली आ रही थी वह अब न मिलेगी। उनकी यह शङ्का सत्य भी थी। अज्ञानता के कारण जिन लोगों का शोषण होता रहता है, उनमें चेतना और आत्म अस्तित्व के साथ जब न्याय अन्याय तथा अधिकार कर्तव्यों का ज्ञान उत्पन्न हो जाता तब उन पर अत्याचार अथवा शोषण का चक्र चला सकना सरल नहीं रहता। ठक्कर बापा के प्रयत्नों से दिन-दिन भीलों में यह चेतना विकसित होती जा रही थी और आत्म-अस्तित्व के साथ अपने सामाजिक अधिकारों के प्रति जागरूक होने लगे थे। शिक्षा और दीक्षा के बल पर उनकी भीरुता तथा भय दूर होता जा रहा था। देवगढ़ बारिया का राजा और उसके साहिब मुसाहिब भीलों के उस सङ्गठन तथा उसके आधार ठक्कर बापा को भङ्ग कर देना चाहते थे। किंतु न तो उनको कोई अवसर मिल रहा था और न सहसा साहस हो रहा था। निदान वे अपने मन ही मन कुढ़ते हुए किसी न किसी बहाने की घात लगाये हुए थे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org



तभी दशहरा आया और देवगढ़ बारिया में वार्षिक मेले की हलचल प्रारम्भ होगई। यह मेला मुख्यत: भीलों तथा आदिवासियों का होता था। उस अवसर पर दूर-दूर से भील और आदिवासी हजारों की तादाद में वहाँ जमा होते थे। नाच, रङ्ग, स्वांग और शराब का बड़ा गहरा दौर चलता था। हजारों की संख्या में स्त्री पुरुष बालक और वृद्ध शराब पीते, गालियाँ बकते और आपस में मार-पीट करते थे। स्वांग और नाच अपनी अश्लीलता से सारा वातावरण गन्दा कर देते थे। लोग शराब के नशे में गिरते, पड़ते, बेहोश होते, कै, करते और उसी में पड़े रहते थे। वह मेला भीलों तथा आदिवासियों के पिछड़े पन, गन्दगी तथा असंस्कार की एक प्रदर्शनी जैसा होता था। बाहर से लोग दूकानें और खोम्चे लेकर आते थे और उन अशिक्षितों को खूब जी भरकर के लूटते थे। मक्कार और धूर्त लोग जादू टोनों के बहाने उन्हें बहकाते और मन माना ठग कर ले जाते थे। सैकड़ों जगह अन्धविश्वास के आधार पर भूत-प्रेत और देवी देवताओं के नाम से अनेक पशु-पक्षियों की बलि चढ़ाया करते। ठक्कर बापा ने इस मेले के विषय में सुन रक्खा था और उसमें जाकर प्रचार करने का निश्चय किया हुआ था।

निदान, जब वह दिन आया ठक्कर बापा अपने शिक्षित तथा प्रशिक्षित स्वयं-सेवकों की टोली लेकर मेले में प्रचार करने के लिये चल पड़े। सारे स्वयं-सेवक साफ सुथरे खादी के कुरते पायजामे और टोपी पहने हुए थे और सबके हाथों में बाँसों के टुकड़ों में जड़ी तख्तियाँ थीं, जिन पर इस प्रकार के प्रचार वाक्य लिखे हुए थे—

"भील भाइयो जागो"—'अपने सामाजिक अधिकार और कर्तव्यों के प्रति जागरूक बनो'—'शराब मत पीओ"—"शराब पीना पाप है"—शराब पीने से बरबादी आती है'—"अपने शरीर और कपड़ों की सफाई रक्खो"—रोज नहाओ, नहाने से तन्दुरुस्ती ठीक रहती है, दाद, खाज आदि के रोग नहीं होते, जादू टोना धोखा है, जादू-टोने से हमेशा दूर रहो, जादू-टोना करने और दिखलाने वाले से मत डरो, यह सब मक्कार और झूठे होते हैं। इन पर विश्वास मत करो, यह तुम्हें धोखा देकर लूट लेंगे। देवी देवताओं के नाम पर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org



पशु-पक्षियों की जान लेना महापाप है। भीलों का सेवा सङ्घ चिरञ्जीवी हो। सारे भील भाई सङ्गठित होकर एक हो जाओ। बच्चों को पढ़ने भेजो। अपने व्यसनों और बुरी आदतों का त्याग करो।

साथ ही आगे-आगे स्वयं-सेवक दल यही नारे लगाते चल रहे थे और पीछे प्रौढ़ों की मण्डली भजन-कीर्तन करती चल रही थी। लोगों के लिये ठक्कर बापा का आयोजित किया हुआ यह समारोह बड़ा नया और कुतूहल वर्धक था। लोग मेले से आ आ कर उसमें मिलने और साथ में नारे लगवाने तथा भजन-कीर्तन करने लगे। उसी समय मेले में वहाँ के राजा की सवारी निकली। उसने वह नई हलचल बड़ी सतर्कता से देखी और अपने हमराहियों से उसके विषय में पूछा—हाँ हुजूरों ने अवसर पाकर ठक्कर बापा की शिकायत मिला-कर उस जागरण के विषय में बतलाया और राज्य के प्रति उसके परिणाम का कल्पित चित्र भी दिखलाया।

राजा ने तुरन्त उस जलूस को भङ्ग कर देने का आदेश दिया। किन्तु उसका आदेश पालन न किया गया। उसने जब कुछ सख्ती और जोर जुल्म की ओर पग उठाया तो नारों में और ऊँचाई आ गई और पूरे मेले में एक आन्दोलन की लहर दौड़ गई। कुअवसर समझ कर राजा अपने हमराहियों के साथ तुरन्त वहाँ से खिसक गया।

ठक्कर बापा ने मेले में एक बड़ी भारी सभा की और उसमें उन सबको हितकर उपदेश से प्रभावित किया। जगह-जगह कीर्तन-भजन की मण्डलियाँ बिठाईं और शराब की दुकानों पर पिकेटिंग की व्यवस्था की। इस सब प्रचार प्रयत्न का इतना अच्छा प्रभाव पड़ा कि बहुत से लोगों ने शराब को न पीने की सामूहिक शपथ ली और सङ्घ तथा आश्रम के नियमों पर चलने का निश्चय भी किया।

इस प्रकार एक अभूतपूर्व सफलता के साथ जब ठक्कर बापा रात गये आश्रम में वापस आये तो उन्हें तुरन्त राज्य सीमा से बाहर चले जाने का आदेश मिला। ठक्कर बापा ने रात भर विश्राम कर लेने की माँग की। किन्तु वह माँग स्वीकार न की गई और और उन्हें ले जाकर रात भर थाने में नजर-

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org



बन्द रक्खा गया। सबेरा होने पर उन्हें सिपाहियों के साथ सीमा से बाहर निकाल दिया गया। किन्तु तब भी ठक्कर बापा का सेवा कार्य न रुका और वे सीमा के बाहर से ही भीलों के सेवा सङ्घ तथा आश्रम के सञ्चालन को करते रहे।

तभी उन्हीं दिनों उडीसा में भयङ्कर अकाल पड़ गया। ठक्कर बापा ने तुरन्त ही सङ्घ तथा आश्रम का सारा दायित्व सुयोग्य भीलों को सौंपा और अकाल पीड़ितों की सहायता के लिये उड़ीसा चल दिये। वहाँ भी उन्होंने सब कार्यक्रम अपनाये जो पञ्चमहाल के अकाल के समय काम में लाये थे। उडीसा के अकाल पीड़ितों की सहायता करने के लिये बापा को न जाने कितनी बार बरसाती नदियों तथा झीलों को तैर कर पार करना पड़ा। न जाने कितनी बार घोर वर्षा में भी गांवों का दौरा करना पड़ा और न जाने कितनी बार जङ्गलों तथा वियावानों को रात के अन्धेरे में पार करना पड़ा। किन्तु सेवा तथा सहायता के कार्यों और पीड़ितों के कष्टों के साथ एकाग्रचित्त ठक्कर बापा ने किसी भी भय, शङ्का, अवरोध अथवा आपत्ति की परवाह न की। बहुत समय तक इस प्रकार अकाल पीड़ितों की सेवा करने के बाद जब बापा निवृत्त हुए तो उनको श्री गोपालकृष्ण गोखले की ओर से उनकी स्थापित की हुई—"सर्वेन्टस् आफ इण्डिया सोसायटी" की सदस्यता ग्रहण करने और उसमें काम करने का निमन्त्रण मिला। यद्यपि बापा का हृदय भील-सेवा-सङ्घ और उनके आश्रम में रखा हुआ था तब भी वे देश के उन महान् नेता का निमंत्रण अस्वीकार न कर सके और इस शर्त पर उनके आजीवन सदस्य बन गये कि पन्द्रह दिन वे 'भारत सेवा समाज' का काम किया करेंगे और महीने में पन्द्रह दिन भीलों के बीच काम करने चले जायेंगे। 'सोसायटी का भी उद्देश्य सेवा करना ही था तब भला उनके अधिकारियों को इस कार्य में ऐसी आपत्ति ही क्या हो सकती थी।

बापा इस समय तक काफी बूढ़े हो चुके के तब भी उनके सेवा कार्यों की तत्परता ज्यों की त्यों बनी हुई थी। वे जब भी भीलों के क्षेत्र में जाते तब बिना विश्राम किये दिन भर गाँव-गाँव घूमकर उनकी प्रगति का निरीक्षण करते

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org



थे। शिक्षा संस्थाओं में जाते और काम देखने के साथ-साथ बच्चों की योग्यता की परीक्षा लेते थे। एक बार वे ऐसे ही दौरे के समय झालोद का आश्रम देखने गये। वहाँ पर उन्हें कुछ ऐसे बच्चे मिले जिनके कपड़े फटे तथा मैले थे। बापा ने उन सब बच्चों के कपड़े अपने हाथ से सींकर के धो दिये। उनका यह काम आश्रम के लिये एक स्थायी उदाहरण बन गया और शिक्षक जब कभी भी किसी छोटे बच्चे के कपड़े फटे या मैले देखते तो उन्हें सीं दिया करते थे और धो भी दिया करते थे। उसके बाद बापा जब भी वहाँ गये उन्होंने किसी भी बच्चे के कपड़े फटे अथवा गन्दे नहीं देखे।

इसी प्रकार एक बार उनको एक स्कूल में कुछ कूड़ा करकट जमा हुआ दिखाई दिया। किसी से कुछ कहने के स्थान पर बापा ने फावड़ा तथा झाड़ू उठाया और सारा स्थान साफ कर दिया। यह घटना भी सभी स्कूलों में उदाहरण बन गई और फिर कभी किसी भी स्कूल में गन्दगी अथवा कूड़ा करकट फिर दिखाई नहीं दिया। इस प्रकार कर्मयोगी तथा कार्योपदेशक ठक्कर बापा किसी को कुछ निर्देश अथवा आदेश देने के बजाय स्वयम् ही करके लोगों को प्रेरित तथा प्रभावित किया करते थे।

जाबुआ गाँव की घटना तो बापा की कर्तव्य परायणता का जीता जागता प्रमाण है जिससे पता चलता है कि कर्तव्य पालन के दायित्व के सम्मुख बापा किसी भी कठिनाई अथवा सङ्कट की किंचित् परवाह न करते थे। झाबुआ ग्राम के निरीक्षण से निवृत्त होकर बापा ने अगले गाँव का कार्यक्रम वहाँ भेज दिया। उन्हें प्रातःकाल ही वहाँ से चल देना था। बापा सोने के लिये चले गये। उनके एक शिष्य मगनलाल झवेरचन्द सोच रहे थे कि अभी से पानी पड़ रहा है और आकाश के लक्षण बता रहे हैं कि यह पानी सबेरे तक न रुक सकेगा। इस दशा में बापा का जाना न हो सकेगा इसलिए वे बहुत रात गये तक काम करते रहे और देर से सोये। निःसन्देह रातभर पानी बरसता रहा। किन्तु जब मगनलाल झवेरचन्द्र जागे तो उन्हें यह देखकर ड़ा आश्चर्य हुआ कि बापा सारे नित्य कर्मों से निवृत्त होकर उस बरसते पानी में यात्रा के लिये तैयार खड़े हैं। श्री मगनलाल ने कहा बापा पानी का हाल तो देखिये ऐसे में

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org



आप कहाँ जायेंगे ? जब पानी रुक जाये तब आप जाइयेगा। बापा ने उत्तर दिया यह कैसे हो सकता। मेरे कार्यक्रम के अवसर पर उस गाँव के लोग मेरी प्रतीक्षा कर रहे होंगे। मेरे समय से न पहुँचने पर वहाँ सबको निराशा होगी और मेरा एक गलत उदाहरण लोगों के सामने आयेगा। तब भी मगनलाल ने वर्षा बढ़ जाने की सम्भावना बतलाते हुए रुक जाने के लिये कहा—किन्तु बापा न रुके और यह कहकर चल दिये कि 'जब वर्षा अपना काम करना नहीं रोकती तो मैं अपना काम क्यों रोक दूँ—"वह अपना काम करेगी और मैं अपना।"

मगनलाल रास्ता दिखलाने के लिये उनके साथ चले तो उन्होंने यह कहकर रोक दिया कि अपना काम छोड़कर मेरे साथ चलने की आवश्यकता नहीं। स्कूल के काम का हर्ज होगा इसलिये तुम्हारा यहाँ रहना बहुत आवश्यक है। फिर भी मगनलाल ने एक भील विद्यार्थी को उनके साथ कर ही दिया। बापा की यात्रा प्रारम्भ हुई और वर्षा का वेग बढ़ने लगा। थोड़ी ही देर में मूसलाधार वर्षा होने लगी सारे रास्ते, पगडंडियाँ और खेत पानी से भर गये। ढेर की ढेर मिट्टी बह-बह कर आने लगी और बापा के पैरों में लिपटने लगी। टखनों तक पाँव कीचड़ में धँसने लगी। भील विद्यार्थी ने वापस चलने के लिए प्रार्थना की। किन्तु बापा लाठी टेकते हुए उस कीचड़ तथा पानी में निरन्तर चलते ही गये। उन्हें चिन्ता थी कि लोग उनकी प्रतीक्षा कर रहे होंगे। किन्तु जब चलते-चलते वे एक नदी के किनारे पहुँचे तो अवश्य ही उसे पार करने की समस्या खड़ी हो गई। कोई नाव व डोंगा वहाँ नहीं था। विद्यार्थी फिर वापस चलने के लिये अनुरोध करने लगा। किन्तु बापा के सामने वापसी का प्रश्न ही नहीं था। उनके सामने तो केवल एक ही बात थी कि वह लोग उनकी उत्सुक प्रतीक्षा कर रहे होंगे।

बापा ने उस विद्यार्थी को वापस कर दिया और स्वयम् ही नदी में उतर कर लाठी से यह थाह लेने लगे कि कहाँ पर पानी उथला है और कहाँ पर से नदी पार की जा सकती है। एक स्थान पर उनको पार जाने योग्य थाह मिल गई और वे पानी को पार करते हुए चल पड़े। किन्तु दस बारह कदम ही चले

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org



होंगे कि धारा का एक ऐसा वेग आया कि बापा बह गये। बड़ी दूर पर जाकर एक ऐसे स्थान पर जाकर लगे जहाँ से निकल कर किनारे पर आ गये। तब भी बापा पार जाने की इच्छा को समाप्त न कर सके। थोड़ी दूर पर उन्हें एक झोंपड़ी दिखाई दी और वे पार जाने का कोई साधन पाने की आशा से उस ओर चल दिये। झोंपड़ी एक भील की थी। उसने बापा को पहचान लिया अकाल के समय बापा उसके घर अन्न वस्त्र देने आये थे। उसने बड़े आवभगत से बापा को बिठाला और जलपान करने की प्रार्थना की। किन्तु बापा ने उसे अपनी व्यथा सुनाई और पार जाने का कोई साधन बतलाने के लिये कहा। उस कृतज्ञ वनवासी ने तत्काल एक नाव का प्रबन्ध किया और बापा को स्वयं उस पार तक पहुँचा दिया। बापा जब वहाँ पहुँचे तो उनको सात घण्टे की देर हो गई थी तब भी उन्होंने देखा कि लोग उनकी प्रतीक्षा कर रहे थे। बापा ने देर का कारण बतलाते हुए सबसे क्षमा माँगी और अपना प्रवचन कार्यक्रम को प्रारम्भ कर दिया। ऐसे कर्तव्य परायण थे ठक्कर बापा।

बापा लगभग अस्सी वर्ष के हो चुके थे और डाक्टरों की राय पर हरिजन सेवक सङ्घ के कार्यालय में विश्राम ले रहे थे। तभी उनको नोआखाली के साम्प्रदायिक दङ्गों के समाचार मिले। निरपराधों की हत्याओं तथा लूटमार की घटनायें सुन-सुनकर उनका हृदय करुणा से भर उठा और वे नोआखाली जाने को तैयार हो गये। किन्तु उनके हित तथा स्वास्थ्य चिन्तकों ने उन्हें हटात् रोक लिया। तभी उन्हें पता चला कि बापू नोआखाली में शान्ति स्थापना के लिये चल पड़े हैं। अब बापा से न रहा गया और बहुत कुछ रोके जाने पर भी यह कहकर चल ही दिये कि देश की महान् विभूति उस ज्वाला के बीच निरपराधों की रक्षा तथा शान्ति स्थापना के लिये जाये और मैं अपना नश्वर शरीर लिये यहाँ पड़ा रहूँ यह कैसे हो सकता है।

बापा भी बापू के साथ कदम से कदम जोड़कर नोआखाली के शान्ति स्थापना के कार्य में जुट गये। बापा नोआखाली के उस चर प्रदेश में काम करने के लिये निकल गये जहाँ उनके प्रिय हरिजन भाइयों पर घोर अत्याचार किया गया था। बापा ने वहाँ जाकर हत्या, लूट पाट और अग्निकाण्ड की घटनाओं

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org



का विवरण इकट्ठा करना प्रारम्भ किया। वहाँ इस समय तक भी गुण्डों का आतङ्क फैला हुआ था। लोग विवरण तथा ब्यौरा बतलाने से डरते थे। बापा ने उन्हें धीरज और साहस बँधाया। अपने प्रार्थना प्रवचन में उन्होंने गुण्डों को उनके अपराधों तथा अत्याचारों के लिये बुरी तरह फटकारा। वहाँ के एक नामी गुण्डे ने जो सबका सरगना था, बापा के पास कहलाया कि 'यह बुड्ढा अपनी बकवास बन्द करदे नहीं तो उसका सिर धड से उड़ा दिया जायगा। लोग यह समाचार सुनकर डर गये और बापा से गुण्डों को कुछ न कहने के लिये प्रार्थना करने लगे।

किन्तु सत्य और सेवा के भक्त ठक्कर बापा कब डरने वाले थे। उन्होंने अपनी प्रार्थना सभा में निर्भीकता पूर्वक कहा—वह गुण्डा मेरा सिर उड़ाना चाहता है आये और अपना काम करके दिखलाये वह एक सिर की बात कहता है, यदि मेरे हजार सिर होते तो भी मैं सत्य की सेवा में उन्हें कटवा देता। उसे जो कुछ करना हो मेरे साथ करे किन्तु मैं, जब तक मेरी साँस चलती रहेगी इसी प्रकार गुण्डों और गुण्डा गर्दी के विरोध में आवाज उठाता रहूँगा। इस प्रकार न जाने कितने खतरे और कष्ट उठाकर बापा नोआखाली में हरिजनों की सेवा करते रहे और तब ही वहाँ से आये तब शान्ति की सम्भावनायें विश्वस्त हो गईं।

अब तक बापा के जीवन-आकाश में इक्यासी सितारे चमक चुके थे। उनका कर्तव्य-हुत शरीर शिथिल हो चुका था और मन निर्वेद की स्थिति में पहुँच चुका था। सारी इन्द्रियाँ विश्राम ले रही थीं। इस समय वे भाव नगर में संन्यास यापन कर रहे थे। लेकिन बापा की कर्तव्य व्यस्तता फिर भी नहीं छूटी थी।

यद्यपि उनका पूरा जीवन-काल दुःखी मानवता और जनता जनार्दन की सेवाओं में ही बीता था उनकी सम्वेदना सहानुभूति, परिश्रम तथा सत्य परायणता के साथ-साथ त्याग, निःस्पृहता और निष्काम कर्मयोग ने उनके सारे सेवा कार्यों को विशुद्ध अध्यात्म में परिणत कर दिया था, तथापि इस समय वे जीवन के उपसंहार में मन ही मन परमात्मा का चिन्तन करते रहते थे। वे रात में

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org



प्राय: जागते ही रहते थे और धीरे-धीरे कुछ कहते रहते थे। जो लोग उनके अस्फुट शब्दों को यदा-कदा सुन सके थे उनके कहने के अनुसार आभास मिलता था कि ठक्कर बापा उस नीरव शान्ति में किसी से कुछ न कुछ बातें करते रहते थे। उनके उस अटपट वार्तालाप का आशय कुछ इस प्रकार का रहता था—कि क्या तुम्हारे विधान में मनुष्य की आयु नहीं मिल सकती जिससे वह अनेक शताब्दियों तक मनुष्यता की जी भर सेवा कर सके।

जितनी सेवा का अवसर मुझे मिला उससे मेरी आत्मा पूरी तरह तृप्त न हो सकी है। जन-सेवा की अभी बहुत बड़ी भूख बनी हुई है। तब भी कोई चिन्ता नहीं इस एक जीवन की परिसमाप्ति ही तो यहाँ पर हो रही है उस अनन्त जीवन की तो नहीं, जो अपने आदि स्रोत से संसार से आदि स्रोत की ओर निरन्तर अविच्छिन्न प्रवाह में आदि काल से बहता आ रहा है, वह रहा है और अविज्ञात अनन्त तक बहता रहेगा। अब मैं जल्दी ही इस शरीर को छोड़ना चाहता हूँ, क्यों कि इसका उपयोग समाप्त हो गया है। किसी निरुपयोगी वस्तु को इस व्यस्त एवम् कर्म पूर्ण संसार में स्थान घेरे रहने की आवश्यकता का कोई औचित्य नहीं। जीवन का वास्तविक रूप कर्म है जब कर्म नहीं तो जीवन नहीं। मुझे बुलाइये जिससे कि मैं यथाशीर्ष नया शरीर पाकर जन-सेवा में लग सकूँ। और इस प्रकार बारबार शरीर धारण कर तब तक मानवता की सेवा करता रहूँ जबतक संसार में मानव पीडित अथवा दुःखी बना रहे। यही मेरी आराधना है, यही मुक्ति और मोक्ष है। पूज्य बापा इसी प्रकार कुछ न कुछ अपनी ही गम्भीर गहराई में कहते जब-तब सुन जाते थे।

तभी एक दिन पन्द्रह सितम्बर उन्नीस सौ पचास को उन्होंने अपनी तल्लीन तन्द्रा में सुना कि सरदार पटेल का देहावसान हो गया है। यह धरती की एक बड़ी घटना थी। बापा सहसा धरातल पर उतर आये और बोले—क्या सरदार पटेल चले गये? समाचार वाहकों ने पुष्टि की और बताया कि उनकी शोक सभा अभी ही होने को जा रही है। इस समाचार को सुनते ही बापा उठ बैठे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org



लोगों ने उन्हें रोकते हुए कहा—बापा आप उठिये नहीं, बहुत दुर्बल हो चुके हैं, हृदय पर काफी जोर पड़ेगा। पर बापा न माने और खड़े होते हुए बोले। हृदय पर क्या जोर पड़ेगा ? जब ऐसा विदारक समाचार सुनकर भी यह अपना काम कर रहा है तो सरदार की शोक सभा में जाने पर इसका कुछ न बिगड़ेगा। मुझे तो आज पता चला है कि मेरा हृदय तो पत्थर की तरह कठोर है। बापा के मुख पर एक खेद पूर्ण छाया छोड़ गई जिसने बताया कि बापा को अपने पर कुछ नाराजी आ गई है।

लोगों ने फिर उनको रोका और कहा—"बापा आप बहुत कमजोर हैं डाक्टरों ने आपके लिये चलने-फिरने और ज्यादा बात करने के लिये निषेध किया है। आप सभा में न जाइये और यहीं पर विश्राम करिये आपकी लिखित सम्वेदना भेज दी जायेगी।"

बापा की मुख मुद्रा अजीब-सी हो गई वे बोले—सरदार जैसे सरदार चले जायें और मैं एक साधारण सा स्वयम् सेवक होकर उनकी शोक सभा में न जा कर यहाँ पर पड़ा-पड़ा आराम करता रहूँ—यह अब कैसे उचित हो सकता है।"

लोगों ने फिर कहा—"अच्छा आप यदि जाना ही चाहते हैं तो जरा ठहर जाइये, आपके लिए डोली में प्रबन्ध कर दिया जाता है आप उसमें चले जाइये।" यह परामर्श सुनकर तो पहले बापा को हँसी आ गई और फिर तुरन्त ही भारी कंठ से बोले—"यह आप लोग क्या कह रहे हैं—सरदार बल्लभ भाई पटेल की शोक सभा में मैं डोली पर चढ़कर जाऊँगा।"—बापा न माने और पैदल ही शोक सभा में चल दिये।

सरदार पटेल की शोक सभा में अध्यक्ष पद से बोलते हुए बापा ने उनकी देश सेवाओं पर प्रकाश डालते हुए कहा—"आज भारत माता का एक महान् सपूत उसकी गोद से चला गया है। किन्तु आशा है कि अन्य बहुत से सपूत उसकी सेवा करते हुए उसके इस शोक को कम करने का प्रयत्न करते रहेंगे। बाद में उन्होंने सरदार पटेल को श्रद्धाञ्जलि दी और शोक समन्वित हृदय से निवास स्थान पर वापस चले आये।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org



बापा को सरदार बल्लभाई पटेल की मृत्यु का गहरा आघात लगा और वे पड़ गये तो फिर न उठ सके। स्वर्गारोहण के दिन उन्होंने अपने लोगों से कहा—"आज क्या शुक्रवार है। सरदार पटेल शुक्रवार को ही तो गये थे और पूज्य बापू भी। इसलिये उनका अनुयायी बापा भी क्यों न आज शुक्रवार के दिन ही चला जाये।"

लोगों ने उनकी बात बड़े दुःख और कुतूहल से सुनी। किन्तु शाम को जब उन्होंने जरूरी डाक सुनकर उसका उत्तर लिख दिया तब बोले—"अब मुझे चार पाई से नीचे उतार लो। भान आ चुका है। अब देर नहीं है।"—और अपने कथनानुसार शुक्रवार १९ जनवरी सन् १९५१ को परमात्मा की वह पावन ज्योति, परमात्मा के रूप में सदा सर्वदा के लिये मिल गई।

ठक्कर बापा ने तप, त्याग और सेवा के आधार पर जिस महिमा और महत्त्व को पाया है वह इतिहास के पन्नों और मानवता के विराट् पट पर सदा अङ्कित रहेगी। आज देश और संसार की त्रस्त मानवता को अनेकों ठक्कर बापा की आवश्यकता है। न जाने भगवान् मनु के कौन-कौन से महान् पुत्र युग की इस आवश्यकता की पूर्ति के लिये बापा की जीवन साधना का पुनः प्रवर्तन करते हुए जन सेवा के क्षेत्र में अपना सर्वस्व देकर श्रेय तथा सौभाग्य के भागीदार बनेंगे ?



मुद्रक—वृन्दावन शर्मा 'जनजागरण प्रेस' मथुरा।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org



उत्कृष्ट व्यक्तियों के जीवन वृत्तान्त जन मानस में मानवीय आदर्शवादिता के लिये आस्था उत्पन्न करते हैं। कहना न होगा कि यह निष्ठा ही लोक-मंगल का मूल आधार है। इस लिये आदर्शवादी व्यक्तियों की जीवन गाथाओं की अधिकाधिक जानकारी जनकल्याण की दृष्टि से अतीव उपयोगी एवं आवश्यक मानी जाती रही है।

युग निर्माण योजना द्वारा विचार-क्रान्ति के लिये जिस अभिनव साहित्य का निर्माण किया जा रहा है उसमें महामानवों के जीवन चरित्रों की सीरीज को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। प्रस्तुत पुस्तक उन्हीं में से एक है। ऐसे-ऐसे अनेक जीवन चरित्र छापे जा रहे हैं। हर महीने उनकी संख्या बढ़ जाती है। पूरी जानकारी पत्र लिखकर प्राप्त की जा सकती है। सभी जीवन चरित्र इसी पुस्तक की भाँति ३२ पृष्ठों में हैं। उनका मूल्य ४० पैसा है।

मानवीय आदर्शों के प्रति आस्था रखने वाले प्रत्येक विचारशील व्यक्ति से आशा की जाती है कि वे इस साहित्य को स्वयं पढ़ें और अपने परिवार तथा साथियों को इसे पढ़ावें, सुनावें।

प्रकाशक—'युग-निर्माण योजना' मथुरा।

मूल्य ४० पैसा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

# : युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य- संक्षिप्त परिचय :



ज्यादा जानकारी यहाँ से प्राप्त करें :
http://hindi.awgp.org/about_us

- **विचारक्रान्ति अभियान के प्रणेता** : विचारों को परिस्कृत और ऊँचा उथाने मे समर्थ 3000 से भी अधिक पुस्तकों के लेखन के माध्यम से विश्वव्यापी विचार क्रान्ति अभियान की शरुआत की ।
- **वेद, पुराण, उपनिषद के प्रसिद्ध भाष्यकार** : जिन्हों ने चारों वेद, 108 उपनिषद, षड दर्शन, 20 स्मृतियाँ एवं 18 पुराणों का युगानुकूल भाष्य किया, साथ ही 19 वाँ प्रज्ञा पुराण की रचना भी की ।
- **3000 से अधिक पुस्तकों के लेखक** : मनुष्य को देवता समान, घर-परिवार को स्वर्ग, समाज को सभ्य और समग्र विश्वराष्ट्र को श्रेष्ठ बनाने मे समर्थ हजारों पुस्तकें लिखकर समयानुकूल समर्थ मार्गदर्शन प्रदान किया ।

- **युग-निर्माण योजना के सूत्रधार** : जिन्होंने शतसूत्री युग निर्माण योजना बनाकर नये युग की आधार शिला रखी ।
- **वैज्ञानिक-अध्यात्मवाद के प्रणेता** : जिन्हों ने धर्म और विज्ञान के समन्वय की प्रथम प्रयोगशाला 'ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान' स्थापित कर सिद्ध किया कि "धर्म और विज्ञान विरोधी नहीं, पुरक है "।
- **'२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' के उद्घोषक** : जिन्हों ने '२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' का नारा दिया तथा युग विभीषिकाओं से भयग्रस्त मनुष्यता को नये युग के आगमन का संदेश दिया ।
- **स्वतंत्रता संग्राम के कर्मठ सैनानी** : जिन्हों ने महात्मा गाँधी, मदन मोहन मालवीय, गुरुवर रविन्द्रनाथ टैगोर के साथ राष्ट्र की स्वाधीनता के लिए संघर्ष किया एवं स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी "श्रीराम मत्त" के रुप में प्रख्यात हुए ।
- **गायत्री के सिद्ध साधक** : जिन्हों ने गायत्री और यज्ञ को रुढियों और पाखण्ड से मुक्त कर जन-जन की उपासना का आधार तथा सद्बुद्धि एवं सतकर्म जागरण का माध्यम बनाया ।
- **तपस्वी** : जिन्होंने गायत्री की कठोरतम साधना कर २४-२४ लाख के २४ महापुरश्चरण २४ वर्षो में सम्पन्न किया । प्रकृति प्रकोप को शांत कर अनिष्टों को टाला, सृजन सम्भावनाओं को साकार किया ।
- **अखिल विश्व गायत्री परिवार के जनक** : जिन्हों ने अपने जीवनकाल में ही अपने साथ करोडों लोगों को आत्मियता के सूत्र में बाँधकर विश्व व्यापी 'युग निर्माण परिवार' - 'गायत्री परिवार' का गठन किया ।
- **समाज सुधारक** : जिन्हों ने नारी जागरण, व्यसन मुक्ति, आदर्श विवाह, जाति-पाँति प्रथा तथा परंपरागत रुढियों की समाप्ति हेतु अद्भूत प्रयास किए एवं एक आदर्श स्वरुप समाज में प्रस्तुत किया ।
- **ऋषि परम्परा के उद्धारक** : जिन्हों ने इस युग में महान ऋषियों की महान परंपराओं की पुनर्स्थापना की । लुप्तप्राय संस्कार परंपरा को पुनर्जीवित कर जन-जन को अवगत कराया ।
- **अवतारी चेतना** : जिन्होंने "धरती पर स्वर्ग के अवतरण और मनुष्य में देवत्व के जागरण" की अवतारी घोषणा को अपना जीवन लक्ष्य बनाया और चेतना का ऐसा प्रवाह चलाया कि करोंडों व्यक्ति उस ओर चल पड़े ।

**गायत्री परिवार** जीवन जीने कि कला के, संस्कृति के आदर्श सिद्धांतों के आधार पर परिवार,समाज,राष्ट्र युग निर्माण करने वाले व्यक्तियों का संघ है। **वसुधैवकुटुम्बकम्** की मान्यता के आदर्श का अनुकरण करते हुये हमारी प्राचीन ऋषि परम्परा का विस्तार करने वाला समूह है गायत्री परिवार। एक संत, सुधारक, लेखक, दार्शनिक, आध्यात्मिक मार्गदर्शक और दूरदर्शी युगऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा स्थापित यह मिशन युग के परिवर्तन के लिए एक जन आंदोलन के रूप में उभरा है।

Free Download Complete Work Of Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya, Founder of All World Gayatri Pariwar
Books, Magazines, Articles, Stories, Poems, Great Personalities and many more at
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org